एम0ए0 चतुर्थ सेमेस्टर (प्राचीन इतिहास) के तृतीय प्रश्नपत्र हेतु महत्वपूर्ण तथ्यों को ई–कन्टेन्ट के रूप में छात्रों को प्रेषित।

प्राचीन भारतीय अभिलेख एवं पुरालिपि शास्त्र

डॉ० अंजना
असिस्टेन्ट प्रोफेसर प्राचीन इतिहास

पिपरहवा बौद्ध अस्थि कलश अभिलेख

- प्राक् मौर्य ब्राह्मी लिपी में उत्कीर्ण यह अभिलेख उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले की उत्तरी–पूर्वी सीमा पर स्थित पिपरहवा नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। यह स्थान नेपाल का समीपवर्ती है। यह अभिलेख बुद्ध के महापरिनिर्वाण के ठीक बाद ही उत्कीर्ण कराया गया होगा। इसकी भाषा पूर्वी वर्ग की प्राकृत है।
- इस अभिलेख में बुद्ध के शाक्यवंशीय बन्धुओं द्वारा परिजनों के साथ बुद्ध के अवशेष मंजूषा में रखने का उल्लेख है।
- इस अभिलेख से यह सिद्ध हो जाता है कि वे (शाक्य) बुद्ध के भस्मावशेष प्राप्त करने में सफल हो गये थे।

सोहगौरा ताम्र–पत्र अभिलेख

- गोरखपुर जिले के सोहगौरा नामक स्थान से प्राप्त यह ताम्रपत्र अभिलेख, कलकत्ता की एशियाटिक सोसाइटी में सुरक्षित है। इसकी भाषा प्राकृत और लिपि प्रारम्भिक ब्राह्मी है।
- यह विशुद्ध शासनपरक अभिलेख है '' सोहगौरा ताम्रपत्र का एकमात्र उदाहरण ऐसा है जो बालू के साँचे में ढाला गया था, जिसमें प्रतीकों समेत वर्ण पहले ही लौह लेखनी से या नुकीली लकड़ी से खोद दिये गये थे। इस पत्र पर वर्ग और प्रतीक दोनों ही उभरे हुए प्रतीत होते है।''
- इस अभिलेख में वंशग्राम में स्थापित किये गये दो कोष्ठागारों का उल्लेख है, जिनमें एकत्रित अनाज को दुर्भिक्ष और, आपत्तिकाल में त्रिकवेणी, माथुर, चंचु मयुदाम और भल्लक

ग्रामों में वितरित करने का आदेश श्रावस्ती के महामात्रों ने मानवाशीतिकट शिविर से दिया था।

अशोक का प्रथम गिरनार शिलालेख

- ❖ अशोक के प्रथम शिलालेख का मुख्य विषय 'जीव–दया' है, जिसमें पशुहत्या और माँस–भक्षण का निषेध किया गया। इसके साथ ही कुछ निश्चित प्रकार के ' समाज' को उचित मानते हुए 'समाज न किये जाने का आदेश दिया गया है।
- ❖ इस शिलालेख के अनुसार अशोक के साम्राज्य में किसी भी पशु का वध न किया जाये।
- ❖ अशोक ने दो मोर, और एक मृग, वह भी निश्चित रूप से नहीं, ही भोजनार्थ मारने की अनुमति दी।
- ❖ मौर्य काल में 'समाज' सामूहिक उत्सव अथवा आमोद–प्रमोद का साधन था। ये सभी सामूहिक आमोद–प्रमोद के साधन थे।
- ❖ **देवानंप्रियस प्रियदसिनो** (देवानांप्रिय त्रियदर्शी) का प्रयोग अशोक के विभिन्न अभिलेखों में अनेक बार हुआ है।
- ❖ देवानंप्रिय का शाब्दिक अर्थ 'देवताओं का प्रिय' है।
- ❖ 'प्रियदर्शी' का शाब्दिक अर्थ है– जिसका दर्शन प्रिय हो। राजा का दर्शन शुभ तथा मंगलकारी माना जाता है।

अशोक का द्वितीय गिरनार शिलालेख

- ❖ सौराष्ट्र के जूनागढ़ नगर के लगभग एक मील की दूरी पर गिरनार की पहाड़ियाँ स्थित है। यहाँ पर अशोक के चौदह शिलालेखों का समूह मिला है। यह अभिलेख ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है। इसकी भाषा प्राकृत है।
- ❖ गिरनार में अशोक के अतिरिक्त दो अन्य प्रसिद्ध राजाओं रूद्रदामन और स्कन्दगुप्त के भी अभिलेख प्राप्त होते है।
- ❖ गिरनार से प्राप्त अशोक के दूसरे शिलालेख से उसके साम्राज्य विस्तार, प्रत्यन्त राज्य, विदेशी राज्य एवं उनसे सम्बन्ध तथा अशोक द्वारा मनुष्यों और पशुओं के लिए किये गये कल्याणकारी कार्यो का ज्ञान होता है।
- ❖ इस शिलालेख के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है, जिसकी पुष्टि अशोक के अन्य अभिलेखों से होती है, कि भारत में अशोक का अधिकार चोल, पाण्ड्य, सत्यपुत्र,

केरलपुत्र एवं ताम्रपर्णी को छोड़कर सर्वत्र था। क्योंकि इन राज्यों को प्रत्यन्त अथवा सीमावर्ती राज्य कहा गया है।

❖ अशोक ने धर्म प्रचार के लिए स्वदेश और विदेश में अनेक लोकोपकारी कार्य किये, जैसे मनुष्यों और पशुओं के कल्याण के लिए मार्गो पर छायादार वृक्ष लगवाये तथा पानी की व्यवस्था के लिए कुएँ खुदवाये।

अशोक का त्रयोदश शिला अभिलेख

❖ पाकिस्तान के पेशावर जिले में यूसुफजई ताल्लुक के शहबाजगढ़ी गांव में, जो मकाम नदी के तट पर स्थित है, अशोक के चौदह अभिलेखों की एक प्रति खरोष्ठी लिपि में प्राप्त होती है।

❖ शहबाजगढ़ी से प्राप्त तेरहवाँ शिलालेख, अशोक की कलिंग विजय के उपरान्त 261 ई० पू०) उत्कीर्ण किया गया। इस अभिलेख का मुख्य विषय अशोक की कलिग विजय, विजय के परिणामस्वरूप अशोक का पश्चाताप, प्रतिक्रिया स्वरूप भेरी घोष के स्थान पर धर्मघोष, धर्मविजय तथा धर्मपराक्रम की ओर अओक का उन्मुख होना है।

❖ कलिंग विजय अशोक के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना है। शासन के तेरह तथा राज्याभिषेक के आठ वर्ष पश्चात् अशोक ने कलिंग विजय की।

❖ दूसरे लेख में उत्कीर्ण है– ' धर्म साधु है। पर धर्म क्या है? अल्प पाप, बहुकल्याण, दया दान और शौच (शुचिता)। अशोक के धार्मिक नियम सार्वदेशिक, सार्वजनिक तथा सार्वकालिक हैं।

❖ धर्म विजय के सम्बन्ध में अशोक का विचार था कि–धर्म विजय ही वास्तविक विजय है, वह प्रीतिरस प्रदायक विजय है, वही ऐहलौकिक और पारलौकिक है।

अशोक का सप्तम स्तम्भ अभिलेख

❖ ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण अशोक का सप्तम स्तम्भलेख केवल देहली टोपरा स्तम्भ पर ही प्राप्त होता है। यह स्तम्भ आजकल दिल्ली के फिरोजशाह कोटला में है। तुगलक वंश के शासक फीरोजशाह द्वारा यह अंवाला जिले के टोपरा ग्राम से दिल्ली लाया गया था। इसीलिए यह दिल्ली दोपरा स्तम्भ लेख के नाम से प्रसिद्ध है।

❖ यह अभिलेख अशोक के राज्याभिषेक के 27 वर्ष बाद लिखवाया गया। इस अभिलेख का विषय अशोक द्वारा धर्म प्रचार का सिंहावलोकन करना है।

- ❖ इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि अशोक ने प्रजा में धर्म की वृद्धि के लिए धर्मोपदेश दिए और विभिन्न धर्मानुशासनों के पालन की आज्ञा प्रसारित की। धर्म प्रसारण के लिए उसने कुछ पुरूषों की नियुक्ति की।
- ❖ 'पुरूष' ऐसे राजकर्मचारी होते थे', जिनका कार्य साम्राज्य के विजित राज्यों में धर्म का प्रचार करना था।
- ❖ 'रज्जुक' ऐसे पदाधिकारी होते थे, जो राज्य के भूमिकर आदि की व्यवस्था करते थे।
- ❖ अशोक द्वारा धर्म प्रचार के लिए नियुक्त किये गये अन्य पदाधिकारी 'धर्म महामात्र' थे शहबाजगढ़ी के अभिलेख से ज्ञात होता है कि अशोक ने अपने राज्याभिषेक के तेरह वर्ष, पश्चात् धर्म महामात्रों की नियुक्ति की थी। इसी अभिलेख से धर्म महामात्रों के कर्त्तव्यों का भी ज्ञान होता है।
- ❖ सप्तम स्तम्भ लेख से ज्ञात होता है कि धर्ममहामात्रों को ब्राह्मण, निर्ग्रन्य आजीवक, और गृहस्थों की देखभाल की करनी पड़ती थी तथा संघ का कार्य भी वे ही करते थे।
- ❖ अशोक के धर्म स्तम्भ के दो प्रकार प्राप्त होते हैं– शिला–स्तम्भ और शिला–फलक। स्तम्भ, खम्भे को कहते हैं और फलक, सपाट चट्टान को। प्रस्तुत अभिलेख में अशोक ने कहा है– '' यह धर्मलिपि जहाँ–जहाँ शिला स्तम्भ व शिलाफलक हों, वहाँ लिखायी जाय, जिससे यह चिरस्थायी हो।''

कलकत्ता बैराट अभिलेख

- ❖ प्राकृत भाषा और ब्राह्मीलिपि में उत्कीर्ण यह लधु शिलालेख सन् 1840ई० में बर्ट महोदय को वैराट से प्राप्त हुआ था
- ❖ बैराट, जयपुर से 42 मील उत्तर पूर्व की और स्थित है। हुल्त्ज महोदय ने इस अभिलेख को कलकत्ता बैराट अभिलेख नाम दिया। यह अभिलेख अशोक को बौद्ध (धर्मावलम्बी) प्रमाणित करता है।
- ❖ इस अभिलेख में अशोक ने बुद्ध, धर्म और संघ के प्रति अपना आदर, और विश्वास प्रकट किया है। बुद्ध, धर्म और संघ इन तीनों शब्दों का एक साथ प्रयोग बौद्ध धर्म में प्रविष्ट होने का प्रवज्या मंत्र है। अशोक ने प्रस्तुत अभिलेख में बौद्ध भिक्षुणियों और उपासक–उपासिकाओं के श्रवण, अध्ययन एवं मनन के लिए कुछ बौद्ध ग्रन्थों का उल्लेख किया है।

रूम्मिनदेई लघु स्तम्भ अभिलेख

❖ रूम्मिनदेई नामक स्थान उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के समीप नेपाल में है। यह स्तम्भ अभिलेख प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में है। यह लेख अशोक के अभिलेख के बीस वर्ष बाद उत्कीर्ण कराया गया। इस अभिलेख का मुख्य विषय अशोक द्वारा बुद्ध के जन्म स्थान 'लुम्बिनी' की यात्रा करना है।

❖ रूम्मिनदेई लघुस्तम्भ अभिलेख यह सूचना देता है कि अभिषिक्त होने के बीस वर्ष बाद अशोक ने इस स्थान की यात्रा की, चूंकि यहाँ महात्मा गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था। यह अभिलेख बुद्ध के निश्चित जन्म स्थान की पहचान कराता है।

❖ अभिलेख के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अशोक के पूर्व और उसके समय में लुम्बिनी की यात्रा करने वालों को प्रवेश कर के रूप में धार्मिक कर देना पड़ता था अतः उसने अपनी यात्रा के समय इस धार्मिक क को समाप्त कर दिया।

❖ अशोक ने बुद्ध के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हुए लुम्बिनी ग्राम के निवासियों लिये जाने वाले भूमिकर को घटाकर आठवाँ भाग कर दिया।

हेलियोडोरस का बेसनगर गरूड़ स्तम्भ अभिलेख

❖ संस्कृत प्रभावित प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में लिखा हुआ यह अभिलेख, मध्यप्रदेश के विदिशा नामक स्थान पर गरूड़ध्वज स्तम्भ पर उत्कीर्ण है। अभिलेख का मुख्य विषय यूनानी राजदूत हेलियोडोरस द्वारा विदिशा में विष्णु की पूजा के लिए गरूड़ध्वज स्थापित कराना है।

❖ यह अभिलेख इण्डोयूनानी शासकों और शुंग राजाओं के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध को प्रकट करता है तथा यह भी सूचना देता है कि प्रथम शताब्दी ई०पू० में वैष्णव धर्म इतना अधिक लोकप्रिय हो चुका था, कि विदेशी भी उसे स्वीकार कर रहे थे।

खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख

❖ खारवेल का हाथी गुम्फा अभिलेख उड़ीसा प्रांत के पुरी जिले के भुवनेश्वर नामक स्थान से तीन मील दूर स्थित उदयगिरि की पहाड़ी की एक गुफा से प्राप्त हुआ है। ब्राह्मी लिपि में लिखित इस अभिलेख की भाषा संस्कृत से प्रभावित प्राकृत है।

❖ अभिलेख का विषय खारवेल का प्रारम्भिक जीवन एवं राज्यारोहण के पश्चात् 13 वर्षीय शासन में उसके द्वारा किये गये विजयाभियान तथा लोकमाँगलिक कार्यो का क्रम–बद्ध विवरण प्रस्तुत करना है।

❖ अभिलेख का आरम्भ अर्हतों एवं सिद्धों के प्रणाम से होता है, जिससे खारवेल का जैनधर्मावलम्बी होना प्रकट होता है। खारवेल आर्य चेदि राजवंश का तथा राजर्षि वसु का वंशज था।

- महामेघवाहन, खारवेल के वंश का सम्भतः प्रवर्तक था। उसी के नाम पर उसके वंश का नाम महामेघ वाहन वंश कहलाया।
- राज्याभिषेक के उपरान्त अभिलेख खारवेल के शासन काल के तेरह वर्षो की घटनाओं का क्रमानुसार वर्णन करता है। प्रथम वर्ष में उसने अपनी राजधानी का संस्कार कराया तथा प्रजा के मनोविनोद के किए 35 लाख मुद्राएँ व्यय की। दूसरे वर्ष उसने शातकर्णि की परवाह न करते हुए अपनी सेना पश्चिम दिशा की भेजी।
- तीसरे वर्ष खारवेल ने प्रजारंजन के हेतु अनेक उत्सवों एवं समाजों का अयोजन किया जो उसकी संगीत–प्रियता एवं गान्धर्व– विद्या के ज्ञान का परिचायक है। चौथे वर्ष में उसने रठिकों एवं भोजकों पर आक्रमण करके उन्हें पराजित किया।
- खारवेल के शासन के पाँचवे वर्ष की घटना ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। खारवेल तिवससत (300,103) वर्ष पूर्व नन्द राज द्वारा बनवायी गयी नहर को तनसुलि नामक स्थान से अपनी राजधानी तक लाया।
- विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर ' तिवससत' का अर्थ तीन सौ वर्ष ही अधिक उचित प्रतीत होता है। नन्द राजा का समीकरण महापद्यनन्द के साथ किया जाता है।
- छठे वर्ष में खारवेल का उल्लेखनीय कार्य राजसूय यज्ञ करना था। सातवें वर्ष में खारवेल को पुत्र की प्राप्ति हुई।
- आठवें वर्ष गोरयगिरि (बराबर की पहाड़ियों पर बना दुर्ग) के दुर्गो को नष्ट कर राजगृह पर आक्रमण किया, जो मगध की प्राचीन राजधानी थी।
- नवें वर्ष में खारवेल ने अड़तालीस लाख मुद्राओं के व्यय से महाविजय नामक प्रासाद का निर्माण कराया। दसवें वर्ष उसने उत्तरी भारतें के लिए विजय– अभियान किया परन्तु इसमें वह असफल हरा।
- ग्यारहवें वर्ष में उसने पिथुण्ड नगर को जीता और गधों से हल चलवा दिया।
- बारहवें वर्ष उसने उत्तरापथ के राजाओं पर आक्रमण कर मगधवासियों को भयभीत किया और अपने हाथी–घोड़ों को गंगा का पानी पिलाया।
- तेरहवें वर्ष में उसने कुमारी पर्वत पर जैन अर्हतों के विश्राम के लिए गुहायें बनवायी तथा उन्हें चीनांशुक (रेशमी धवल वस्त्र) प्रदान किये।
- हाथीगुम्फा अभिलेख की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें खारवेल के शासन की घटनाओं का क्रम–बद्ध विवरण प्रस्तुत किया गया। प्राचीन भारतीय अभिलेखों में यह एकमात्र अभिलेख है, जिसमें उपर्युक्त विशेषता पाई जाती है।
- अभिलेख के आधार पर खारवेल का समय प्रथम शताब्दी ई०पू० निश्चित किया जाता है। खारवेल को प्रथम शताब्दी ई०पू० में मानना समीचीन है।

रूद्रदामन का गिरनार (जूनागढ़) अभिलेख

- ❖ रूद्रदामन का यह अभिलेख जूनागढ़ (गुजरात) जिले में गिरनार पर्वत पर प्राप्त हुआ है। ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण संस्कृत भाषा का यह अभिलेख अब तक के प्राप्त संस्कृत अभिलेखों में सर्वाधिक प्राचीन है। इस अभिलेख की तिथि 72, जिसे विद्वान शक सम्वत् का वर्ष मानते है। रूद्रदामन कम से कम 140 ई० तक अवश्य राज्य कर रहा था।
- ❖ रूद्रदाजन महाक्षत्रप स्वामी चष्टन का पौत्र एवं राजा क्षत्रप जयदामन पुत्र था। चष्टन की महाक्षत्रप और स्वामी की उपधियाँ उसकी महानता एवं स्वतन्त्रता की द्योतक है।
- ❖ इस अभिलेख में चष्टन के पुत्र जयदामन के लिए क्षत्रप उपाधि का प्रयोग हुआ है।
- ❖ अभिलेख की 12 वीं पंक्ति में यौधेयों और दक्षिणापथपति सातकर्णी का उल्लेख हुआ है। रूद्रदामन ने दक्षिणी पूर्वी पंजाब में निवास करने वाले यौधेयों को बुरी तरह पराजित किया। यौधेयों का उल्लेख पाणिनि की अष्टाध्यायी में भी प्राप्त होता है।
- ❖ रूद्रदामन ने दक्षिणापथ के राजा सातकर्णी को दो बार खुली लड़ाई में पराजित किया।
- ❖ इस अभिलेख में रूद्रदामन की भ्रष्टराजप्रतिष्ठापक (ऐसे राजाओं को उनके राज्य प्रदान किये जो पहले छीने जा चुके थे) कहा गया है।
- ❖ यह अभिलेख रूद्रदामन के व्यक्तित्व और उसके शासन प्रबन्ध पर भी प्रकाश डालता है। इसके अनुसार रूद्रदामन उच्च नैतिक आदर्शो और नियमों का पालन करता था। उसने युद्ध के अतिरिक्त आजीवन किसी का वध न करने की प्रतिज्ञा की सत्यसिद्ध करके दिखाया।
- ❖ सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार इस अभिलेख का प्रमुख वर्ण्य–विषय है। इस झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रान्तीय शासक ने इस प्रदेश में बाँध बनाकर सिंचाई करने के लिए कराया था। अशोक के राज्यकाल में यूनानी शासक तुषास्प ने इस झील के अनेक जल प्रणालियाँ (नहरें) निकलवायी। रूद्रदामन के समय मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष की प्रतिषदा के दिन, प्रजा के हित एवं सुविधा के लिए इस बाँध का पुननिर्माण आवश्यक था,
- ❖ रूद्रदामन ने आमात्य सुविशाख की देख–रेख में प्रजा के अनुग्रह के लिए व्यक्तिगत कोष से इस बाँध का पुननिर्माण कराया।
- ❖ अब यह झील वस्तुतः सुदर्शन हो गयी। इस झील का पुननिर्माण 72 वें वर्ष में कराया गया।
- ❖ रूद्रदामन का यह अभिलेख तत्कालीन संस्कृत गद्य–शैली के विकास का प्रमाण है।

समुद्रगुप्त का प्रयाग –स्तम्भ अभिलेख

❖ संस्कृत भाषा एवं उत्तरी ब्राह्मीलिपि में उत्कीर्ण समुद्रगुप्त की प्रशस्ति इलाहाबाद के किले में 35 फुट लम्बे स्तम्भ पर उत्कीर्ण है।

❖ अशोक के समय में निर्मित यह स्तम्भ मूल रूप में कौशाम्बी में स्थित था, इस पर जहाँगीर के समय का भी एक लेख उत्कीर्ण है।

❖ समुद्रगुप्त के निर्वाचन और उसके भाइयों के विद्रोह के पश्चात् प्रयाग–प्रशस्ति उसके द्वारा अच्युत, नागसेन, गणपतिनाग और कोटकुलज के विरूद्ध लड़े गये युद्धों का वर्णन करती है।

❖ समुद्रगुप्त ने युद्ध में अच्युत, नागसेन, गणपतिनाग को युद्ध में उनमीलित किया और कोट कुलज को बन्दी बना कर पुष्पनगर में क्रीड़ा की।

❖ समुद्रगुप्त को दक्षिणापथ के निम्न लिखित 12 राजाओं से युद्ध करने पड़े थे –

1. कोशल का महेन्द्र
2. महाकान्तर का व्याघ्रराज
3. केरल का मण्टराज
4. पिष्टपुर का महेन्द्रगिरि
5. कोट्टूर का स्वामिदत्त
6. एरण्डपल्ल का दमन
7. कांची का विष्णुगोप
8. अवमुक्त का नीलराज
9. वेंगी का हस्तिवर्मन
10. पालक्क का उग्रसेन
11. देवराष्ट्र का कुबेर
12. कुस्थलपुर का धनंजय

❖ इस प्रकार दक्षिण भारत के इन प्रदेशों को जीतता हुआ समुद्रगुप्त कांची तक पहुँच गया था समुद्रगुप्त ने इन राजाओं को पराजित कर बंदी बनाया और बाद में इन्हें स्वतंत्र कर (मोक्ष) उनके राज्य उन्हें लौटा दिये (अनुग्रह)

❖ रघुवंश में समुद्रगुप्त की दक्षिण भारत की विजय के उपरान्त प्रयाग–प्रशस्ति आर्यावर्त के नौ राजाओं का उल्लेख करती है, जो इस प्रकार हैं–

1. रूद्रदेव
2. मतिल
3. नागदत्त

4. चन्द्रवर्मा
5. गणपतिनाग
6. नागसेन
7. अच्युत
8. नन्दि
9. बलवर्मा

❖ प्रयाग –प्रशस्ति समुद्रगुप्त के व्यक्तित्व और चरित्र पर भी प्रकाश डालती है।

❖ प्रयाग –प्रशस्ति समुद्रगुप्त के विद्यानुराग पर भी प्रकाश डालती है। उसके उच्चकोटि के काव्य के लिए ' कविराज' की उपाधि दी गयी थी। अपनी वीणा शैली की मुद्राओं में समुद्रगुप्त वीणा लिए हुए चित्रित किया गया है।

❖ प्रयाग– प्रशस्ति अपने रचनाकार हरिषेण के विषय में भी सूचनायें प्रदान करती है, जो महादंडनायक ध्रुवभूति का पुत्र और समुद्रगुप्त का कुमारामात्य तथा सान्धिविग्रहिक था।

❖ प्रयाग प्रशस्ति चम्पू–शैली में लिखी गयी है। इसका प्रारम्भिक भाग पद्य में और उत्तर कालीन भाग गद्य में लिखा गया है। इसके नन्दाकान्ता, स्रग्धरा, और शादूलविकीडित छन्दों में लिखे गये है। इसकी पद्य शैली की तुलना वाणभट्ट की गौड़ी शैली से की जा सकती है। दुर्भायवश प्रयाग प्रशस्ति में तिथि का उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। फ्लीट के अनुसार उसने अश्वमेघ–यज्ञ सम्पन्न किया था।

चन्द्र का मेहरौली लौह– स्तम्भ अभिलेख

❖ दिल्ली से नौ मील दक्षिण में मेहरौली नामक ग्राम, जो प्राचीन कालीन मिहिरपुरी है, में कुतुबमीनार के निकट एक लौह स्तम्भ है, जिस पर संस्कृत भाषा और बाह्मी लिपि में शादूलविकीडित छन्द में यह लेख उत्कीर्ण है।

❖ इस अभिलेख का विषय 'चन्द्र' नामक राजा की उपलब्धियों एवं उसके द्वारा विष्णु पद नामक पर्वत पर विष्णु–ध्वज स्थापित कराने का वर्णन करना है।

❖ अभिलेख में उल्लिखित चन्द्र का समीकरण विद्वानों के लिए विवाद का विषय है। एच0सी0 सेठ ने चन्द्र की पहिचान चन्द्रगुप्त मौर्य से की है। रायचौधरी और अय्यर ने 'चन्द्र' का तादात्म्य पुराणों में उल्लिखित सदाचन्द्र अथवा चन्द्रांश से किया है।

❖ फ्लीट, आयंगार, बसाक प्रभृति विद्वान चन्द्र की पहचान गुप्तवंश के चन्द्रगुप्त प्रथम से करते हैं।

❖ हार्नले, अल्टैकर, डी०सी० सरकार, जायसवाल, मुकर्जी, दाण्डेकर, गंगाप्रसाद मेहता, सुधाकर चट्टोपाध्याय, जी०आर०शर्मा आदि विद्वानों ने चन्द्र का समीकरण गुप्तवंशी राजा चंन्द्रगुप्त द्वितीय के साथ किया है। विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मतों के अध्ययन से आधुनिकतम

निष्कर्ष यह निकाला गया है कि मेहरौली स्तम्भ लेख में उल्लिखित चंद्र वस्ततः गुप्तवंशीय चंद्रगुप्त द्वितीय ही था।

❖ इस अभिलेख में तिथि का उल्लेख नहीं हुआ है तथापि, लिपि के आधार पर इसे गुप्तकालीन माना जाता है।

कुमारगुप्त और बन्धुवर्मन का मन्दसौर अभिलेख

❖ संस्कृत भाषा और गुप्तकालीन ब्राह्मी लिपि की दक्षिणी शैली में उत्कीर्ण यह अभिलेख मालवा के दशपुर नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। इस अभिलेख की खोज करने और उसे प्रकाश में लाने का श्रेय कनिघम और फ्लीट महोदय को है। इस अभिलेख का मुख्य विषय गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम के गोप्ता विश्ववर्मा के पुत्र बन्धुवर्मा के समय में प्राचीन दशपुर (आधुनिक मन्दसौर) नामक नगर में पट्टवाय श्रेणी के द्वारा मालव संवत् 413 में एक सूर्य–मन्दिर का निर्माण और मालव संवत् 521 में उसका जीर्णोद्वार है।

❖ अभिलेख के प्रारम्भिक तीन श्लोकों में सूर्य–स्तुति की गयी है। वैदिक साहित्य में सूर्योपासना का उल्लेख मिलता है

❖ इस प्रशस्ति में लाट में रहने वाली तन्तुवाय श्रेणी के दशपुर नगर में जाकर बसने का वर्णन है।

❖ पट्टवायों की यह श्रेणी दशपुर में आकर अपने परम्परागत व्यवसाय के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों में भी संलग्न हो गयी। यह अभिलेख उनकी कला–प्रियता का स्पष्ट प्रमाण है।

❖ इस प्रशस्ति की रचना इतिहास प्रसिद्ध गुप्तवंश के राजा कुमारगुप्त द्वितीय के समय में 472 ई० (521 मा०स०) में हुई।

❖ लाट प्रदेश से तंतवायु की श्रेणी का दशपुर आना और सूर्य मन्दिर का निर्माण कराना इस प्रशस्ति की प्रमुख उल्लिखित घटना है।

❖ इस प्रशस्ति के रचयिता वत्सभट्टि हैं, जिन्होंने तंतुवाय श्रेणी के आदेश पर ही इसकी रचना की थी।

स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ जिला अभिलेख

- ❖ जूनागढ़ (गुजरात) जिले में गिरनार पर्वत पर प्राप्त स्कन्दगुप्त का यह अभिलेख संस्कृत भाषा और दक्षिणी ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।
- ❖ इस अभिलेख का मुख्य विषय स्कन्दगुप्त के शासन काल में सुदर्शन झील के बाँध का टूटना और सौराष्ट्र प्रांत के राज्यपाल पर्णदत्त के पुत्र चकपालिक द्वारा उसका पुनः निर्माण कराना है।
- ❖ अभिलेख का आरम्भ विष्णु की स्तुति से हुआ है।
- ❖ इस अभिलेख के पाँचवे श्लोक में कहा गया है कि लक्ष्मी स्वयं यं वरयाञचकार अर्थात् राजलक्ष्मी ने अन्य सभी राजपुत्रों का परित्याग कर स्कन्दगुप्त को अपना वर चुना। रमेशचन्द्र मजूमदार बी०पी० सिन्हा, पी०एल० आदि विद्वानों ने उपर्युक्त कथन के आधार पर यह मत प्रतिपादित किया कि कुमारगुप्त की मृत्यु के उपरान्त उसके पुत्रों स्कन्दगुप्त आदि) में सिंहासन के लिए युद्ध हुआ। इस संघर्ष में स्कन्दगुप्त विजयी हुआ और लक्ष्मी ने उसका वरण किया।
- ❖ समस्त भूमण्डल पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त स्कन्दगुप्त ने अपने साम्राज्य के विभिन्न प्रान्तों में राज्यपाल (गोप्ता) नियुक्ति किये। जूनागढ़ अभिलेख के अनुसार सौराष्ट्र का प्रान्त उसके साम्राज्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रान्त था।
- ❖ स्कन्दगुप्त ने पर्णदत्त को यहाँ का राज्यपाल नियुक्त किया। गुप्त –सम्वत् 136 में सुदर्शन झील का बाँध टूट गया। सुदर्शन झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के सौराष्ट्र के राज्यपाल पुष्यगुप्त वैश्य ने गिरनार पर्वत पर कराया था।
- ❖ स्कन्दगुप्त के समय में घनघोर वर्षा के कारण यह बाँध पुनः टूट गया, जिससे जनता को भीषण कष्ट होने लगा। अतः पर्णदत्त के पुत्र चकपालित ने राज्य और नागरिकों के कल्याण के लिए 137 गुप्त –सम्वत् में (456 ई०) सुदर्शन झील को फिर से बँधवा दिया। अब यह बाँध एक सौ हाथ लम्बा, अड़सठ हाय चौड़ा, सात पुरूषों के बराबर ऊँचा तथा दो सौ हाथ गहरा हो गया।
- ❖ गुप्त सम्वत् 168 में चकपालित ने इसके किनारे चकवारी विष्णु के एक मन्दिर का भी निर्माण कराया।

स्कन्दगुप्त का भितरी स्तम्भ अभिलेख

- ❖ उत्तरी ब्राह्मी लिपि, संस्कृत भाषा, गद्य और पुष्पिताग्रा, मालिनी शार्दूलविकीडित एवं अनुष्टुभ् छन्दों से रचित यह अभिलेख गाजीपुर जिले के सैदपुर से उत्तर–पूर्व 5 मील दूर स्थित भितरी नाम गाँव में ट्रेगियर महोदय को प्राप्त हुआ था।
- ❖ भितरी लेख के प्रारम्भ में स्कन्दगुप्त तक गुप्तवंश की वंशावली प्रस्तुत की गयी है। लिच्छवि दौहित्र महाराजाधिराज समुद्रगुप्त को महाराज गुप्त का प्रपौत्र, महाराज घटोत्कच का पौत्र और महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त तथा महादेवी कुमारदेवी का पुत्र बतलाया गया है।
- ❖ इस अभिलेख में सभी महाराजाधिराजों की रानियों के नाम दिये गये है पर कुमार गुप्त की रानी और स्कन्दगुप्त की माता का नाम नहीं है।
- ❖ भितरी –अभिलेख के चौथे श्लोक में पुष्यमित्रों की चर्चा है।
- ❖ पुष्यमित्र जाति के निवास के विषय में फ्लीट का मत है, वह नर्मदा तट के निवासी थे।
- ❖ स्कन्दगुप्त ने पुष्यमित्रों को पराजित किया। पुष्यमित्रों का आक्रमण भयंकर था।
- ❖ कुमारगुप्त के अन्तिम दिनों एवं स्कन्दगुप्त के प्रारम्भिक वर्षो में हूणों ने गुप्तवंश पर आक्रमण किया।
- ❖ हूणों के साथ स्कन्दगुप्त की युद्ध बड़ा भयंकर था। सम्भवतः यह युद्ध गंगा की घाटी (श्रोतुषु गांगध्वनि) में हुआ था।

ईशानवर्मन का हरहा शिलालेख

- ❖ संस्कृत भाषा और उत्तरी ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण यह अभिलेख उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले के हरहा ग्राम से भी हीरानद शास्त्री को 1915 ई० में प्राप्त हुआ था।
- ❖ अभिलेख में विक्रम सम्वत् की 611 (554ई०) तिथि उत्कीर्ण है। गर्ग्गशकट के निवासी रविशान्ति जो कुमार शान्ति का पुत्र था, ने इस प्रशस्ति की रचना की थी तथा अभिलेख का मुख्य उद्देश्य ईशानवर्मा के पुत्र सूर्यवर्मा द्वारा एक जीर्णशीर्ण शिव–मदिर के उद्वार का वर्णन है।
- ❖ इस अभिलेख से मौखरी–वंश के प्रथम चार राजाओं की कृतियों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है। अभिलेख का आरम्भ शिवस्तुति से हुआ है हरहा अभिलेख में अश्वपति नामक एक नरेश का उल्लेख हुआ है। मौखरी उन्हीं के वंशज थे।
- ❖ हरिवर्मा मोखरी वंश का प्रथम नरेश था। हरिवर्मा का पुत्र आदित्यवर्मा था।
- ❖ आदित्यवर्मा का पुत्र एवं उत्तराधिकारी ईश्वरवर्मा था। यह भी ब्राह्माणधर्मावलम्बी था।
- ❖ ईश्वरवर्मा का उत्तराधिकारी उसका पुत्र ईशानवर्मा हुआ। हरहा अभिलेख ईशानवर्मा के शासन काल की प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डालता ह।

❖ अभिलेख के 13 वें श्लोक में उसके द्वारा पराजित तीन शाक्तियों के नाम दिये गये है।– आन्ध्र, शूलिक और गौड़।

आदित्यसेन का अपसद शिलालेख

❖ अफसद या अपसढ़ अभिलेख बिहार प्रांत के गया जिले के नवादा तहसील की सकारी नदी के किनारे स्थित अपसद गांव में सन् 1850 ई० से कुछ समय पूर्व मेजर मरखम किट्टो को प्राप्त हुआ था।

❖ पद्य में लिखित इस अभिलेख की भाषा संस्कृत तथा लिपि उत्तरी ब्राह्मी है।

❖ अभिलेख का मुख्य विषय आदित्यसेन का यशगान करना तथा उसके द्वारा भगवान विष्णु के मंदिर के निर्माण कार्य का उल्लेख करना है। आदित्यसेन के सन्दर्भ में उसकी वंशावली, माता के द्वारा निर्मित एवं धार्मिकों को प्रदत्त मठ तथा पत्नी के द्वारा तडाग के उत्खनन कार्य का भी परिचय दिया गया है।

❖ उत्तर–गुप्त वंश तथा उत्तरगुप्तों एवं मौखरियों के संघर्ष के इतिहास के लिए यह अभिलेख अत्यंत उपयोगी है।

❖ इस अभिलेख में उत्तरगुप्त वंश के प्रथम कृष्णगुप्त से लेकर आठवें शासक आदित्यसेन तक का विवरण प्राप्त होता है।

❖ आदित्यसेन को छोड़कर इस वंश के सभी राजाओं के नाम गुप्त नामन्त है, जिसके कारण इन राजाओं के वंश को उत्तर–गुप्त भी कहा जाता है।

❖ कृष्णगुप्त – यह अभिलेख कृष्णगुप्त को आदित्यसेन के वंश का प्रथम शासक बतलाता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि कृष्णगुप्त उत्तर वंश का संस्थापक था।

❖ अभिलेख में उसे असंख्य रिपुओं के प्रताप को जीतने वाला कहा गया है परन्तु शत्रुओं के नामों की चर्चा नहीं है।

❖ हर्षगुप्त – अभिलेख के अनुसार इस वंश का दूसरा शासक कृष्णगुप्त का पुत्र हर्षगुप्त था। उसने भयंकर युद्धों में विजय प्राप्त की थी, जिसके फल– स्वरूप उसके सीने पर कठोर शस्त्रों के प्रहार से चिंह अंकित हो गये थे।

❖ जीवितगुप्त– हर्षगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र जीवितगुप्त हुआ। इसे जीवितगुप्त प्रथम कहा जाता है, क्योंकि इस वंश के अन्तिम राजा का भी यही नाम था, जिसका उल्लेख देवरनाक अभिलेख में हुआ।

❖ पर्वतों और गुहाओं में छिपे हुए तथा कदली वृक्षों से घिरे हुए समुद्रतट पर निवास करने वाले शत्रुओं को पराजित किया। विद्वानों ने पर्वत पर निवास करने वाले शत्रुओं का समीकरण नेपाल के लिच्छवियों से और समुद्रतट पर रहने वाले शत्रुओं का साम्य वंगाल के समुद्रतटीय निवासी गौड़ों से किया है।

❖ कुमारगुप्त– जीवितगुप्त प्रथम के पश्चात् उसका पुत्र कुमारगुप्त राजा हुआ।

❖ अपसद अभिलेख के अनुसार कुमारगुप्त ने ईशानवर्मन की सेना रूपी समुद्र को मंदर पर्वत की भाँति मथ डाला। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कुमारगुप्त ने ईशानवर्मन को पराजित किया।

❖ अभिलेख में कहा गया है कि उसने प्रज्ज्वलित अग्नि में प्रविष्ट हो प्रयाग में अपने प्राण त्योगे थे।

❖ निहाररंजन रे के अनुसार कुमारगुप्त ईशानवर्मन से पराजित हुआ था, जिसके कारण उसने प्रयाग में प्रज्ज्वलित अग्नि में कूदकर अपने प्राण दिये थे।

❖ आदित्यसेन – माधवगुप्त के बाद उसका पुत्र आदित्यसेन राजा हुआ। यह प्रशस्तिपरक अभिलेख सूक्ष्मशिव के द्वारा उत्कीर्ण कराया गया।

पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल अभिलेख

❖ संस्कृत भाषा एवं दक्षिणी ब्राह्मी लिपि का पुलकेशी द्वितीय का ऐहोल अभिलेख बीजापुर जिले के ऐहोल नामक स्थान पर रविकीर्ति द्वारा निर्मित जैन मन्दिर की एक दीवार पर उत्कीर्ण है।

❖ बादामी के प्रसिद्ध शासक पुलकेशी द्वितीय के सम्बन्ध में विस्तृत एवं व्यवस्थित सूचना देने के कारण यह अभिलेख 'पुलकेशी द्वितीय का ऐहोल अभिलेख' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

❖ पुलकेशी द्वितीय बादामी की चालुक्य शाखा का था।

❖ ऐहोल अभिलेख के अनुसार जयसिंह (प्रथम) बादामी की चालुक्य शाखा का पहला राजा था उसका उत्तराधिकारी रणराग था।

❖ रणराग का पुत्र पुलकेशी प्रथम ही वास्तव में बादामी के चालुक्य वंश की राजसत्ता का संस्थापक था उसने 543–566ई० तक शासन किया पुलकेशी प्रथम ने अश्वमेघ,वाजपेय, और हिरण्यगर्भ आदि यज्ञों का सम्पादन कर अपनी शाक्ति का परिचय दिया और श्रीपृथ्वीवल्लभ, रणविक्रम, सत्याश्रय, आदि के विरूद्ध धारण किए।

❖ पुलकेशी प्रथम के पश्चात् उसका पुत्र कीतिवर्मन, राजा हुआ। उसने कदम्बों, मौर्यो एवं नलों को पराजित किया, जो क्रमशः बनवासी प्रदेश, कोंकण प्रदेश और बस्तर प्रदेश में राज्य कर रहे थे। कीर्तिवर्मन के बाद उसका अनुज मंगलेश सिंहासन पर बैठा।

❖ ऐहोल अभिलेख में उसे पूर्वी और पश्चिमी घाट के बीच के प्रदेशों का विजेता कहा गया है।

❖ मंगलेश अपने पश्चात् अपने पुत्र को राजा बनाना चाहता था। पुलकेशी द्वितीय ने उसके विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। युद्ध में मंगलेश मारा गया और उसके पश्चात् पुलकेशी द्वितीय राजा हुआ।

❖ ऐहोल अभिलेख के 23वें श्लोक में पुलकेशी द्वितीय की सर्वोधिक प्रसिद्ध विजय का उल्लेख हुआ है, सकलोत्तरापथनाथ हर्षवर्धन के ऊपर प्राप्त की थी।

❖ अभिलेख के अनुसार युद्ध में हाथियों के मारे जाने से हर्ष हर्षरहित हो गया। पुलकेशी द्वितीय द्वारा हर्ष की पराजय का उल्लेख ह्वेनसांग के विवरण, ह्वेनसांग की जीवनी एवं येक्केरी अभिलेख में भी मिलता है।

❖ गुर्जर नरेश दद्द के नौसारी दान पत्र से यह ज्ञात होता है कि हर्ष ने वलमी नरेश (ध्रुवसेन द्वितीय को पराजित किया और पड़ोसी राजा दद्द ने उसे शरण दी। दद्दजैसे छोटे राजा द्वारा हर्ष जैसे महान सम्राट के विरूद्ध वलभी नरेश को शरण देना आश्चर्यजनक है। विद्वानों ने ऐसा अनुमन प्रकट किया है। कि गुर्जर राजा दद्द को पुलकेशी द्वितीय की सहायता प्राप्त थी।

❖ पुलकेशी द्वितीय का समकालीन पल्लव नरेश महेन्द्रवर्मन प्रथम दक्षिण भारत में उसका सबसे बड़ा प्रतिद्वन्दी था। इसलिए पुलकेशी ने पल्लवों पर आक्रमण किया। उसकी सेनायें पल्लव राज्य में राजधानी काँची से केवल 15 मील उत्तर पुल्लकूल तक घुस गयी

❖ राजा महेन्द्रवर्मन अपनी राजधानी को बचाने में सफल रहा लेकिन उसे अपने उत्तरी प्रदेश पुलकेशी को देने पड़े।

❖ दूसरे चरण में पल्लव राजा नरसिंहवर्मन के आक्रमण का सामना करते हुए पुलकेशी द्वितीय मारा गया। उसका नाम **सत्याश्रय** भी था।

❖ रविकीर्ति ने पुलकेशी द्वितीय की सहायता से महाभारत युद्ध के 3765 वर्ष प्श्चात् शक सम्वत् 556 (634ई०) में एक जैन मन्दिर का निर्माण कराया, जिसकी एक दीवार पर यह प्रशस्ति उत्कीर्ण है।

❖ शुद्ध साहित्यिक संस्कृत में लिखा हुआ यह अभिलेख उत्कृष्ट काव्य का उदाहरण है प्रस्तुत करता है वैदर्भ रीति में गौड़ी बन्ध का आयोजन करते हुए इसमें दशाधिक छन्दों का प्रयोग हुआ है।

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX